अध्याय पंचम
शोध सार
एवं सुझाव

अध्याय पंचम

सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

ज्ञानार्जन में भाषा का महत्व सर्वोपरि है। वह अपने आप में अध्ययन का स्वतंत्र विषय तो है ही उसके साथ–साथ समस्त ज्ञान का वाहक भी है। प्राथमिक स्तर पर भाषा ही पाठ्यक्रम की आधार शिला है। और मानक हिन्दी भाषा तो जिस बहुभाषिकता का प्रतिनिधित्व करती है, उसमें स्थानीय, क्षेत्रीय और अखिल भारतीय संस्कृति की शब्द सम्पदा सम्मिलित है। किन्तु देश में हिन्दी भाषा के इतने बृहद रूप में उपयोग होने के उपरान्त भी विद्यार्थी हिन्दी भाषा की व्यवसायिक दक्षता को हासिल नहीं कर पाते है वे न केवल विद्यालयीन स्तर पर अपितु विश्वविद्यालयीन स्तर में आने के उपरान्त कई व्यवहारिक व्याकरणों का सही एवं अधिकतम प्रयोग नहीं कर पाते हैं। जो कि प्रारंभिक स्तर की शिक्षण कमियों के नतीजे को ही दर्शाती है।

5.1 प्रस्तुत अध्ययन :

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्यिक रूचि और उनमें मुहावरे ज्ञान योग्यता कितनी है तथा इन दोनों में सार्थक संबंध है। साथ ही विद्यार्थियों को ज्ञात मुहावरों को वे किस स्त्रोत द्वारा ज्ञानार्जित कर रहे है, जिस आधार पर विद्यार्थियों के ज्ञाननिर्माण में सर्वाधिक सहायक स्त्रोत को ज्ञात किया जा सके।

5.2 समस्या कथन :

आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्यिक रूचि एवं उनके मुहावरे ज्ञान के संबंध का अध्ययन करना।

5.3 शोध के उद्देश्य :

- आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि का अध्ययन करना।
- आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के हिन्दी मुहावरे ज्ञान का अध्ययन करना।
- आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि एवं मुहावरे ज्ञान के संबंध का अध्ययन करना।
- आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर साहित्यिक रूचि में पाए जाने वाले अंतर का अध्ययन करना।
- आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर मुहावरे ज्ञान में होने वाले अंतर का अध्ययन करना।
- आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के विद्यालय प्रकार (शासकीय एवं अशासकीय) के आधार पर साहित्यिक रूचि में पाए जाने वाले अंतर का अध्ययन करना।
- आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के कारण मुहावरे ज्ञान में होने वाले अंतर का अध्ययन करना।
- आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों को ज्ञात मुहावरों का स्त्रोत पता करना।

शोध की परिकल्पना

1 आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि एवं मुहावरे ज्ञान में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

2 शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3 शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में आठवीं कक्षा में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं है।

4 आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की साहित्यिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5 आठवी कक्षा में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के मुहावरे ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं है।

5.5 शोध में प्रयुक्त चर :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य मूलतः दो चरों साहित्यिक रूचि और मुहावरों ज्ञान के मध्य सहसंबंध ज्ञात करना है। अतः इस अध्ययन के मुख्य चर साहित्यिक रूचि के विभिन्न घटक पठन, लेखन, व्याकरण, वार्तालाप, हिन्दी संबंधित सहगामी क्रियाएं, कक्षा शिक्षण और साहित्य है तथा मुहावरें ज्ञान के विभिन्न घटक क्रोध, युद्ध, पशु व शरीरांग संबंधी मुहावरे है। साथ ही साथ मुहावरें ज्ञान के विभिन्न स्त्रोत शिक्षक, किताब, माता–पिता तथा अन्य (यथा मित्र समूह, मीडिया) भी इस अध्ययन के चर है।

हालाँकि इस अध्ययन में विद्यालय प्रकार (शासकीय एवं अशासकीय) तथा लिंग (छात्र एवं छात्राओं) की बहिरंग चर के रूप में पहचान की गई है।

5.6 न्यादर्श :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए न्यादर्श का चयन करने के उद्देश्य से भोपाल जिले के कुल 2210 विद्यालयों में से तीन शासकीय एवं दो अशासकीय विद्यालयों तथा उनमें पढ़ने वाले आठवीं के कुल 64745 विद्यार्थियों में से 150 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया। अर्थात् पाँचों विद्यालयों में से आठवीं कक्षा के 30–30 विद्यार्थियों को शोध अध्ययन के न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया।

इन न्यादर्श पर "सर्वेक्षण शोध प्रविधि" द्वारा उपकरण का प्रशासन कर आँकड़ों का संकलन व विश्लेषण किया गया।

5.7 शोध में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित उपकरण का निर्माण किया गया, जिसके माध्यम से आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि एवं उनके मुहावरें ज्ञान के संबंध को जाना गया। इस उपकरण की तीन उपभागों में विभाजित कर आंकड़ों को एकत्रित किया गया। जिसका विवरण निम्नवत् है–

साहित्यिक अभिरूचि से संबंधित परीक्षण प्रपत्र– इस प्रपत्र को विशेषज्ञों, निर्देशकों, विषय विशेषज्ञों तथा विद्यार्थियों पर पूर्व जांच करने के उपरान्त अन्ततः 35 साहित्यिक रूचि संबंधी कथनों को अन्तिम रूप दिया गया। जिसमें साहित्यिक रूचि संबंधी कथनों के उत्तर तीन बिन्दु अनुमंताक मापनी (सहमत/तटस्थ /असहमत) पर देने थे।

मुहावरे ज्ञान योग्यता परीक्षण प्रपत्र– इस पत्र में कक्षास्तर के अनुरूप कुल 25 मुहावरों (जिनके उत्तर विकल्पात्मक रूप में देने थे) दिये गये जिसमें मुहावरें के अर्थ संबंधी सही उत्तर को विद्यार्थियों को चिन्हित करना था ।

मुहावरे ज्ञान के स्त्रोत ज्ञात करने हेतु प्रपत्र– इस प्रपत्र में सामान्य दस मुहावरों के माध्यम से विद्यार्थियों को ज्ञात इन मुहावरों के स्त्रोत की जानकारी एकत्रित की गई।

इस तरह प्रस्तुत शोध में उपर्युक्त तीनों उपकरणों के माध्यम से न्यादर्श से आँकड़ों का संग्रह किया गया।

5.8 प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी :

आँकड़ों को उपकरण के माध्यम से संकलित करने के उपरान्त उपयुक्त सांख्यिकी विधि को भी तीन वर्गो में विभाजित कर शोध के अन्तिम निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

प्रथम भाग में विश्लेषणात्मक सांख्यिकी द्वारा साहित्यिक रूचि एवं मुहावरे ज्ञान के सभी कथनों की आवृत्ति तथा प्रतिशत को ज्ञात किया गया, फिर साहित्यिक रूचि के सात घटकों तथा मुहावरें ज्ञान के चार घटकों का मध्यमान, मानक विचलन, विषमता व कुकुदता ज्ञात की गई।

द्वितीय भाग में पांचों परिकल्पनाओं की सांख्यिकी विश्लेषण द्वारा सार्थकता की जांच की गई जिसमें सहसंबंध व टी मान प्राप्त कर सार्थकता को जांचा गया। साथ ही साहित्यिक रूचि और मुहावरे ज्ञान के घटकों के मध्य अन्तःसहसंबंध और अंर्तसहसंबंध को भी ज्ञात किया गया।

अन्त में **तृतीय भाग** में इन मुहावरें ज्ञान के विभिन्न स्त्रोतों के औसत मध्यमान को ज्ञात कर प्रतिशत आधार पर विभिन्न स्त्रोतों के योगदान को ज्ञात किया गया ।

5.9 निष्कर्ष एवं व्याख्या :

प्रस्तुत शोध का अध्ययन करते हुए, न्यादर्श से प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि एवं उनके मुहावरें ज्ञान में कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया।
- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मुहावरें ज्ञान में सार्थक अन्तर पाया गया। क्योंकि शासकीय विद्यालय हिन्दी माध्यम के होने के कारण उनका मुहावरा ज्ञान अपेक्षाकृत अधिक तथा अशासकीय विद्यालय

अंग्रेजी माध्यम में होने के कारण उनका मुहावरा ज्ञान कम पाया गया जो दर्शाता है कि विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान को शिक्षण का माध्यम प्रभावित करता है।

- लिंग के आधार पर छात्र एवं छात्राओं की साहित्यिक रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

- लिंग के आधार पर छात्र एवं छात्राओं के मुहावरें ज्ञान में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

- विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान किताबों का फिर क्रमशः शिक्षक, अन्य (मित्र समूह, मीडिया) का पाया गया तथा अभिभावक का योगदान मुहावरे ज्ञान के निर्माण में सर्वाधिक न्यूनतम पाया गया।

- साहित्यिक रूचि के घटक पठन, लेखन, व्याकरण तथा सहगामी क्रियाएं आपस में सहसंबंधित पाई गई जबकि अन्य घटक वार्तालाप एवं कक्षा शिक्षण का अन्य घटकों के साथ कोई संबंध नहीं पाया गया।

- क्रोध, लड़ाई, जानवर तथा शरीरांग संबंधी सभी मुहावरे सहसंबंधित पाये गये।

5.10 शैक्षिक महत्व :

इस अध्ययन से भाषा शिक्षण एवं अध्ययन क्षेत्र में सहायता मिल सकती है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि एवं उनके व्याकरणिक ज्ञान अनुसार उन्हें भाषा की व्यवसायिक दक्षता में कुशल किया जा सकता है इस अध्ययन के निम्नलिखित शैक्षिक महत्व देखने की मिलते है –

- पठन, लेखन, व्याकरण तथा सहगामी क्रियाओं संबंधी साहित्यिक रूचियों में विद्यार्थियों का अत्यधिक रूझान प्राप्त हुआ जिसको शिक्षक द्वारा प्रोत्साहित किये जाने पर शिक्षार्थियों में व्यवसायिक दक्षता को भी विकसित किया जा सकता है।

- हिन्दी अंग्रेजी भाषा के सामान्तर अनुवाद करने में भी विद्यार्थियों की रूचि पाई गई जिसको शिक्षक प्रारंभिक स्तर पर ही प्रोत्साहित कर अनुवादन कला में विद्यार्थियों को निपुण कर सकता है।

- अपठित गद्यांशों को भी हल करना विद्यार्थियों को रूचिकर लगता है अतः प्रश्नपत्र में इससे संबंधित अधिकाधिक भाषाई प्रश्न दिये जाने चाहिए ।

- विद्यार्थियों में पुस्तकालय के प्रति भी रूचि पाई गई अतः विद्यालयों में पुस्तकालयों की उचित व्यवस्था तथा उनके सुनियोजित उपयोग की ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

- सभी विद्यार्थियों को विद्यालय पत्रिका में लिखने के लिए सहयोग व प्रोत्साहन प्रदान कर उचित पृष्ठ पोषण दिया जाना चाहिए, क्योंकि लगभग 85 प्रतिशत विद्यार्थियों की इस ओर रूचि पाई गई है।

- शिक्षक द्वारा साहित्यक रूचि एवं मुहावरे ज्ञान से संबंधित क्षेत्रों को अलग अलग शिक्षण दे, विकसित किया जाना चाहिए।

- इस अध्ययन के उपरांत यह भी ज्ञात होता है कि शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वो साहित्यिक रूचि के विभिन्न घटकों के मुहावरों का उचित प्रयोग करना विद्यार्थियों को सिखाएँ।

- इस अध्ययन के माध्यम से विषय विशेषज्ञों को यह भी ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के व्याकरणिक ज्ञान में निर्माण में विद्यालयीन संबंधी परिप्रेक्ष्य का ही महत्वपूर्ण स्थान है।

- इस अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि शिक्षण का माध्यम भी विद्यार्थियों के मुहावरे ज्ञान को प्रभावित करता है।

5.11 सुझाव :

- विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि को प्रारंभिक स्तर से ही प्रोत्साहित व पृष्ठ पोषित किया जाना चाहिए। जिससे वह व्यवसायिक दक्षता की भी प्राप्त कर सकें।

- विद्यार्थियों के ज्ञान निर्माण व रूचि को प्रोत्साहित करने में शिक्षक का ही महत्वपूर्ण योगदान है अतः उसे कर्मनिष्ठ, पथ, प्रदर्शक, सूत्रधार व निर्देशक बनकर विद्यार्थियों का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

- भाषाई पाठयक्रम को शुरू करने से पूर्व शिक्षकों को पुस्तक के प्राक्ककथन में दी गई विषयवस्तु व उद्देश्य से पूर्ण रूपेण परिचित रहना चाहिए।

- विद्यार्थियों को मुहावरों का व्यवहारिक ज्ञान भी देने की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थी मुहावरों का उपयोग कर अपनी बात को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त कर सकें।

- विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि के विभिन्न घटकों में व्याकरण ज्ञान को भी सम्मिलित किये जाने की आवश्यकता है।

5.12 भावी शोध हेतु समस्याएं :

भविष्य में इसी विषयवस्तुत से संबंधित निम्न विषयों पर महत्वपूर्ण अध्ययन किये जा सकते हैं–

- शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि एवं मुहावरे ज्ञान से संबंधित तुलनात्मक अध्ययन किये जा सकते है।
- ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की साहित्यिक रूचि एवं मुहावरे ज्ञान या लोकोक्ति में संबंधों को अध्ययन किया जा सकता है।
- राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों तथा केन्द्र सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्याकरण ज्ञान में पाये जाने वाले अन्तरों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।
- अहिन्दी भाषाई क्षेत्रों एवं हिन्दी भाषाई क्षेत्रों के विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्यिक रूचि में पाये जाने वाले अन्तर का भी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।